SHRI N.K. PREMACHANDRAN: Sir, the use of fertilizer alone has contributed 60 per cent increase in the agricultural production. Our country has attained this self-sufficiency in respect of food production only because of the increase in the producion of the fertilizers. It may be noted that 209 million metric tonnes was the food production during 2000-01 and the subsidy bill was only Rs. 13,000 crores. That means, for feeding 103 crores of people in our country, my humble question is—even as per the WTO Agreement, the developing countries can give 10 per cent subsidy for the agricultural production—whether the Government of India is proposing or thinking of enhancing the fertilizer subsidy in the light of decline in the food production during the year 2002-03.

श्री सुखदेव सिंह ढिंडसा: सर, अभी हाल में किसी भी फर्टिलाइज़र की कीमत बढ़ाई नहीं गई और फाइनैंस मिनिस्ट्री या एग्रीकल्चर मिनिस्ट्री ही इस बारे में कुछ करेंगी कि सब्सिडी और बढ़नी चाहिए या नहीं बढ़नी चाहिए और यह तो उसी वक्त फैसला होगा जब बजट आएगा। लेकिन अभी तक सब्सिडी कम नहीं की गई है हमने पिछले तीन साल से उतनी ही रखी है।

Shortfall in agricultural production

*183. DR. M.N. DAS:
DR. T. SUBBARAMI REDDY:†

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether foodgrain production during 2002-03 was the lowest in the past seven years;

(b) whether oilseeds output too was the lowest since the past 13 years;

(c) if so, the extent to which the shortage is likely to affect the country;

(d) whether the Ministry has assessed the total output of wheat, coarse grain, paddy and oilseeds for 2003-04;

(e) whether any contingency plan has been prepared to meet the shortage; and

†The question was actually asked on the floor of the House by Dr. T. Subbarami Reddy.

(f) if so, the details thereof?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI HUKUMDEO NARAYAN YADAV): (a) to (f) A Statement is laid on the Table of the Sabha.

Statement

(a) Yes, Sir. The foodgrain production during 2002-03 was the lowest since 1996-97.

(b) Yes, Sir. The oilseeds production in 2002-03 was also the lowest since 1990-91.

(c) As the stock of foodgrains comprising both rice and wheat was well above the buffer norm, the shortfall in production in 2002-03 has not adversely affected food security in India. However, in the case of oilseeds the sharp decline in production in 2002-03 has widened the domestic demand-supply gap, thereby necessitating reliance on imports of edible oils. Since the import of edible oils has been placed under the Open General License (OGL) and as there are no quantitative restrictions on their imports, the shortfall has been made good through imports.

(d) to (f) In view of the favourable monsoon rainfall, the kharif production in 2003-04 in respect of paddy, coarse grains and oilseeds is expected to be around the normal production levels. In the case of wheat, which is a rabi crop, it is too early to make an assessment of production during 2003-04. Besides contingency crop planning, efforts are also being made to promote varietal replacement and propagation of newer location specific High Yielding Varieties with biotic and abiotic resistance, efficient use of fertilizers and need-based plant protection measures.

श्री हुक्मदेव नारायण यादव: महोदय, इस साल बरसात कुछ पहले भी आई है और समय से है, वर्षा अच्छी है। जहां-कहीं भी इससे संबंधित कुछ कमी-त्रुटि है, राज्य सरकारों के साथ हमारा सम्पर्क बना रहता है, उनसे सम्पर्क करके, परामर्श करके जहां भी आवश्यकता होगी, तदनुसार उसमें परिवर्तन करके सुधार लाने का हम प्रयत्न करेंगे जिससे कोई किसान दुखी न हो।

DR. T. SUBBARAMI REDDY: Mr. Chairman, Sir, the hon. Minister in his reply has stated that since we have got good stocks of wheat and rice, we could overcome the problem of shortage of last year, but, at the same time, he has also clarified that edible oil had to be imported due to shortage of oilseeds. Now, this year also the shortage of oilseeds is likely to continue, so we should control the imports, otherwise it will always be dangerous for the self-sufficiency of the country. In this context, I would like to know what efforts this Ministry is going to make to imporve the oilseeds production and also to reduce imports of edible oil.

श्री हुक्मदेव नारायण यादव: महोदय, उत्पादन बढ़ाने के लिए हमारा जो मिशन चल रहा है, उसके तहत कई प्रकार की आधुनिकतम और वैज्ञानिक टेक्नोलॉजी हम किसानों को देते हैं लेकिन इसमें राज्य सरकार के साथ हमें पूर्ण सहयोग चाहिए ताकि हम अधिक तेल का उत्पादन कर सकें और आयात को उतनी ही दूर तक जाने दें जिससे कि यहां के तेल उत्पादक किसानों को कोई नुकसान न हो। इस पर भी सरकार पूर्ण रूप से सचेष्ट रहती है।

श्री मोती लाल वोरा: सभापति जी, मैं माननीय कृषि मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि जो सन 2002-2003 में 1996-1997 की तुलना में आपने कम उत्पादन स्वीकार किया है, इसका मुख्य कारण क्या था? उत्पादन कितना होना चाहिए था और कितना हुआ है? साऊथ ईस्ट एशिया में हिंदुस्तान ऐसा देश है जहां लगातार इन वर्षों में खाद्य के उत्पादन में कमी आई है। मैं जानना चाहता हूं कि वे कौन-से मुख्य कारण थे जिसके कारण यह गिरावट आई? आपने बताया कि सूखा था लेकिन सारे देश में सूखा नहीं था। सारे देश में सूखे की स्थिति किस प्रकार की थी? कितना उत्पादन होना चाहिए था और कितना उत्पादन कम हुआ, ये आंकड़े माननीय मंत्री जी ने नहीं दिए हैं।

श्री हुक्मदेव नारायण यादव: सभापति महोदय, वर्ष 2002-2003 के लिए हमारा लक्ष्य 220 मिलियन टन उत्पादन का था और हमारा उत्पादन 182.57 मिलियन टन हुआ है, जो सहज ही कम है। इस साल के लिए भी हमारा लक्ष्य 220 मिलियन टन का रखा गया है और सरकार को उम्मीद है कि इस साल हम अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। हमारे वैज्ञानिक इस दिशा में प्रयत्न कर रहे हैं।

श्री मोती लाल वोरा: मेरा निवेदन यह था कि ऑयलसीड के उत्पादन में भी कमी आई है। उन्होंने अपने उत्तर में लिखा है कि sharp decline in the production

of oilseeds. सभापति जी, मुझे माननीय मंत्री जी से यह पूछना है कि आपने ऑयलसीड के और ऑयल के इंपोर्ट के लिए कोई लाइसेंस तो रखा नहीं है, उसे खुला कर दिया है तो ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: यह क्वेश्चन के स्कोप में नहीं है।

श्री मोती लाल वोरा: यह प्रश्न इसलिए उपस्थित होता है कि इन्होंने खुला कर दिया है लेकिन कितनी शार्टेज आपके पास है। आज बाजार में अगर तेल बिक रहा है तो किस कीमत पर बिक रहा है? क्या आपको इसकी जानकारी है?

श्री सभापति: तेल खरीदने वालों को, सबको जानकारी है।

श्री मोती लाल वोरा: मैं माननीय मंत्री जी से यह कहना चाहता हूं कि जो शार्प डिक्लाइन हुआ, कितना शार्प डिक्लाइन हुआ और शार्प डिक्लाइन होने के कारण आज आपने लाइसेंस दे दिए और उसको खुला कर दिया। खुला करने के बाद आज बाजार में तेल की क्या स्थिति है?

श्री सभापति: पचौरी जी, आप पूछिए। मंत्री जी, आप इन दोनों सवालों का साथ ही जवाब दे देना।

श्री सुरेश पचौरी: सभापति महोदय, अकाल एक या दो वर्षों से था। अगर आप आंकड़े देखें तो पिछले 7 वर्षों से एक या दो राज्यों को छोड़कर बाकी राज्यों में अकाल नहीं है। मैं अगर फूड प्रोडक्शन के आंकड़े बताऊं तो उसमें स्थिति यह है कि ऑयलसीड का जो प्रोडक्शन है, उसमें 24.7 परसेंट की गिरावट आई है। फूड प्रोडक्शन में जो गिरावट है, माननीय मंत्री जी ने जो आंकड़े बताए हैं, फरवरी 2003 की सर्वे रिपोर्ट के आंकड़े हैं कि 212 मिलियन टन से घटकर वह 183.17 मिलियन टन हो गया है। प्रश्न इस बात का है कि एग्रीकल्चर सेक्टर में जो 5.7 प्रतिशत प्रोडक्शन होना चाहिए था, वह घटकर -3.1 परसेंट हो गया है। यह एक अत्यंत गंभीर मामला है। इसका कारण मात्र अकाल नहीं है। इसके और भी कारण हैं और इसके लिए समय-समय पर जो आकलन किया गया है, जो रिपोर्ट बनाई गई है, यदि मंत्री जी उन अंशों पर गौर करें और उन पर अमल कर लें तो एग्रीकल्चर प्रोडक्शन में जो लगातार गिरावट हो रही है, उस पर अंकुश लग जाएगा। मैं आपके जरिए माननीय मंत्री से कहना चाहता हूं कि यह जो ऑयलसीड प्रोडक्शन है, एग्रीकल्चर प्रोडक्शन है, इसमें लगातार गिरावट पिछले 6-7 वर्षों से आ रही है। इस वर्ष के आंकड़े रहे लोएस्ट हैं। उस गंभीरता को दृष्टिगत रखते हुए अकाल के अतिरिक्त और भी कारण हैं, यदि कारण रहे हैं तो उन कारणों को दृष्टिगत रखते हुए सरकार ने क्या कदम उठाए हैं?

श्री हुक्मदेव नारायण यादव: सभापति महोदय, माननीय सदस्य ने जो प्रश्न किया है वह उचित है। इसका एक कारण अकाल तो है। उसके साथ-साथ अन्य कारण हैं। जहां सिंचाई की व्यवस्था बढ़ती गई वहां-वहां किसान धान और गेहूं की खेती की ओर बढ़ते चले गये ओर तिलहन उत्पादन की खेती से हटते गये। सरकार इसका प्रयास कर रही है कि उन क्षेत्रों में हम ऐसे तिलहन के बीज का अविष्कार करें कि वह सिंचित क्षेत्र में भी अधिक से अधिक उत्पादन दे सके और इसके लिए हमारा मिशन है। अन्य भी जो कारण हैं उनके लिए सरकार की तरफ से समीक्षा की जाती है। इसके कई कारण हैं। अगर इन कारणों को गिनाया जाये तो काफी समय इसमें लगेगा। इन कारणों के निवारण के लिए सरकार समय-समय पर मंत्रालय में कमेटी बनाती है, चर्चा करती है और उनके निवारण के लिए सरकार समय-समय पर मंत्रालय में कमेटी बनाती है, चर्चा करती है और उनके निवारण के लिए प्रयत्न करते है। लेकिन इतना जरूर आश्वासन हम सरकार की ओर से देंगे कि किसानों को इस संबंध में किसी तरह की तकलीफ नहीं होगी और उनके निवारण के लिए हम प्रयत्नशील हैं।

SHRI NILOTPAL BASU: Sir, through you, I would like to know from the Agriculture Minister whether the declining pattern of food grains production is due to a sharp fall in public investments in agriculture or due to a shift away of the cropping area from food crops to non-food and commercial crops and whether it is also due to a shift away from the coarse foodgrains to a finer variety which is meant for exports.

श्री हुक्मदेव नारायण यादव: सभापति महोदय, यह भी एक कारण है जो आपने कहा है। हम तो चाहते हैं। ...**(व्यवधान)**...

श्री नीलोत्पल बसु: मैंने तीन कारण गिनाये हैं।

श्री सभापति: तीनों ही कारण हैं।

श्री हुक्मदेव नारायण यादव: जो किसान धान, गेहूं, गन्ना इत्यादि पैदा करते हैं उसके बदले वे दूसरी फसल की ओर बढ़ रहे हैं। किसान मेडीसनल प्लांट, औषधि और सुगंधित पौधे लगायें, फल की खेती, सब्जी की खेती करें और ऐसे उत्पादन करें जिसकी गुणवत्ता अच्छी हो जिससे विश्व के बाजार में हम प्रतिस्पर्धा में सफल हो सकें, इसके लिए भी हम प्रयत्न कर रहे हैं। बाकी आपने कहा है कि गिरावट के कई कारण हैं। अगर एक फसल के उत्पादन में गिरावट आती है तो दूसरी फसल का उत्पादन बढ़ता है। अगर संयुक्त रूप से सम्मिलित और समग्रता से आप सभी फसलों की ओर देखेंगे

तो लगभग थोड़ा बहुत अंतर आता है कोई अधिक का अंतर नहीं आता है। ...(**व्यवधान**)...

श्री नीलोत्पल बसु: एक तरफ तो आप बोल रहे हैं कि फूड प्रोडक्शन घट रहा है।

श्री सभापति: ठीक है, हो गया।

श्री नीलोत्पल बसु: फिर भी हमारा स्टॉक इतना ज्यादा है। यह तो अपने आप में एक विरोधाभास है। फूड सिक्योरिटी में भी खतरा है, आप इसको पहचानने से इन्कार कर रहे हैं। यही हमारे लिए सबसे चिंता का विषय है कि लगातार सात साल से फूड प्रोडक्शन घट रह है, लोगों के पास पैसा नहीं है इसलिए वे खरीद नहीं पा रहे हैं। इसके चलते फूड स्टॉक बढ़ गया है और इसके बावजूद आप फूड सिक्योरिटी को जो खतरा पैदा हो रहा है, इसको पहचानने से इन्कार कर रहे हैं। यह तो देश के लिए एक विकट परिस्थिति पैदा हो गई है।

श्री सभापति: ठीक है, ठीक है।

श्री हुक्मदेव नारायण यादव: सभापति महोदय, जो प्रश्न माननीय सदस्य उठा रहे हैं। इससे संबंधित एक प्रश्न आज ही है जिसमें खाद्य सुरक्षा और अन्य चीजों की चर्चा है। मैंने जैसे आपको बताया कि अगर अन्न खाना कम हुआ है तो दूसरी चीजें खा रहे हैं।

Foreign universities

*184. SHRI NANA DESHMUKH: Will the Minister of HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT be pleased to state:

(a) what is the number of foreign universities that are operating in one way or the other in India giving details of the number and the name of country of their origin; and

(b) what precautions have been taken to grant approval to such foreign universities before their entry in India?

THE MINISTER OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (DR. MURLI MANOHAR JOSHI): (a) and (b) A statement is laid on the Table of the House.